अंतरिक्ष यात्रा और बंदरों पर प्रयोग का विवाद

यूएस की अंतरिक्ष एजेंसी नासा बंदरों पर कुछ प्रयोग करने पर विचार कर रहा है ताकि भावी अंतरिक्ष यात्राओं

को सुरक्षित बनाया जा सके। इन प्रयोगों के दौरान बंदरों को उस तरह के विकिरण के संपर्क में रखा जाएगा जो अंतरिक्ष में पाए जाते हैं। पीपुल फॉर एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स (पेटा) नामक जंतु अधिकार समूह ने इन प्रयोगों पर सख्त आपत्ति उठाई है।

गिलहरी बंदर (*सैमिरी स्कियूरियस*) पर प्रस्तावित इन प्रयोगों का मकसद यह देखना है कि अंतरिक्ष में जो कॉस्मिक किरणें होती हैं उनका तंत्रिका तंत्र के कामकाज पर क्या असर पड़ता है। अब तक अंतरिक्ष में मनुष्यों को अधिक से अधिक चांद पर भेजा गया है। यहां पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र कॉस्मिक किरणों से रक्षा प्रदान करता है। मगर अब योजना है कि मनुष्य मंगल की यात्रा करेगा। पेटा द्वारा जानकारी के अधिकार के तहत प्राप्त दस्तावेज़ों से पता चलता है कि नासा ने निर्णय ले लिया है कि बंदरों पर ये प्रयोग निकट भविष्य में किए जाएंगे। नासा के मुताबिक विकिरण के असर का अध्ययन आवश्यक है।

दूसरी ओर पेटा का मत है कि इसके लिए नए सिरे से प्रयोग करने की ज़रूरत नहीं है। पूर्व में किए गए प्रयोगों और परमाणु बम विस्फोट के बाद फौजियों पर हुए विकिरण के असर के आधार पर उपयोगी निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। इसके अलावा, पेटा का कहना है कि जिस प्रयोग की बात हो रही है उसमें कुछ बंदरों को चंद दिनों के लिए विकिरण की उच्च मात्रा के संपर्क में रखा जाएगा जबकि अंतरिक्ष यात्रियों को तो कई दिनों तक ऐसे विकिरण की कमतर मात्रा के संपर्क में रहना होगा। लिहाज़ा, बंदरों पर किए जाने वाले ये प्रयोग हमें वास्तविक परिस्थिति के बारे में कोई खास जानकारी नहीं दे पाएंगे।

नासा के वैज्ञानिक कहते हैं कि पूर्व में किए गए प्रयोगों से ज़रूरी जानकारी नहीं मिल पाएगी और नए सिरे से प्रयोग करना ज़रूरी है। खास तौर से पूर्व के प्रयोगों में तंत्रिका तंत्र पर असर की जानकारी नहीं मिलती। तंत्रिका तंत्र पर असर को जानना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि लंबी-लंबी अंतरिक्ष यात्राओं में अंतरिक्ष यात्रियों के व्यवहार व कामकाज पर इसका असर पड़ेगा। नासा का यह भी कहना है कि ये प्रयोग कई वर्षों तक किए जाएंगे ताकि वास्तविक परिस्थिति से साम्य बनाया जा सके।

जहां दुनिया भर के जंतु अधिकार समूहों का मत है कि ऐसे प्रयोगों के विकल्प उपलब्ध हैं वहीं नासा से जुड़े वैज्ञानिक कहते हैं कि उनके पास हर वर्ष सैकड़ों शोध प्रस्ताव आते हैं मगर इनमें इस प्रयोग का कोई वैकल्पिक प्रस्ताव अभी तक नहीं आया है।

अमरीकी सरकार की योजना 2020 तक मंगल पर मानव को भेजने की है। इस संदर्भ में यह विवाद महत्त्वपूर्ण हो जाता है। ***(स्रोत फीचर्स)***